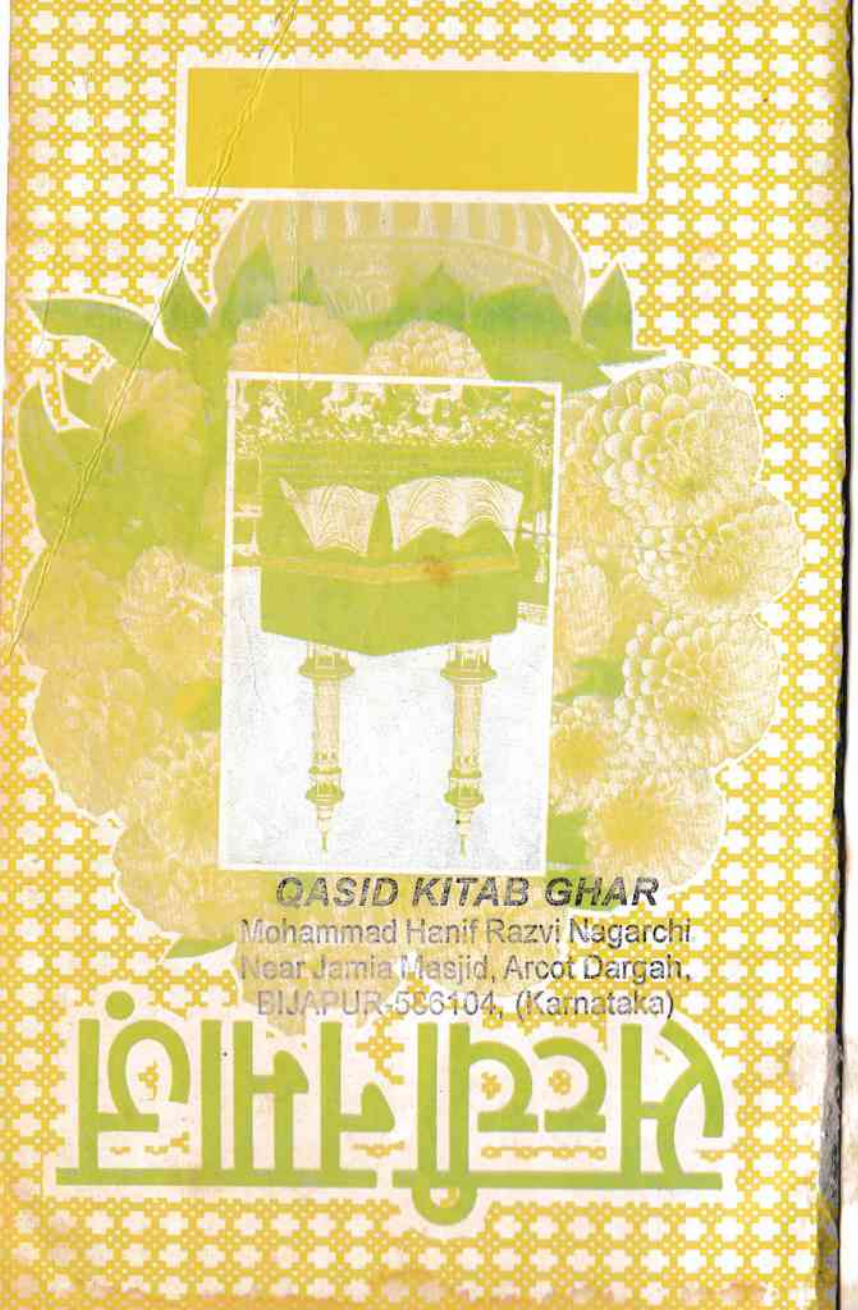
तरीक़ए फ़ातिहा



मकतबा जामे नूर
जामा मस्जिद, दिल्ली–6



फ़ातिहा बैठे हुए वो पढ़ रहे हैं क़बर पर
शमाअ बाहर जल रही है रोशनी मदफ़न में है

सुबूते फ़ातिहा — *जुमला हकूक़ मेहफूज़* — आदाबे फ़ातिहा

फ़ातिहा का तरीक़ा

बफ़ैज

मुफ्ती मुहम्मद हुसैन क़ादरी रिज़वी

मुरत्तबा

अनीस अहमद नूरी

हिन्दी कर्ता

साबिर हुसैन फ़ैज़ी

नाशिर

मकतबा जामे नूर

422, मटिया महल, जामा मस्जिद दिल्ली - 6

Ph. : 3281418

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहम दहु व नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम

फ़ातिहा के दलाइल व फ़ज़ाइल

हम्दो सलात के बाद हर मुसलमान को मालूम होना चाहिए कि रजब में इमाम जाफ़र रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की फातिहा हो या शबे बरात का हलवा, मुहर्रम का खिचड़ा हो या ग्यारहवीं का खाना। इसी तरह तीजा हो या दसवां, चहल्लुम हो या बरसी, हर एक की असल इसाले सवाब है यानी किसी मुसलमान को नफ़ली सवाब पहुंचाना जो शरीअत में जाइज़ है वो (जवाज़ मौजूद है) पस जिस चीज़ की असल शरअ शरीफ़ में मौजूद है वो बिदअते क़बीहा व सय्येआ क्योंकर हो सकती है। हर वो नेकी जिसका सवाब मैय्यत को भी पहुंचाया जा सकता है (यानी नफ़ली इबादत) अब अगर मैय्यत गुनाहगार है तो यह सवाब उसके लिए गुनाहों को मिटाने वाला होगा वरना बाइसे तरक़्क़ी दरजात और इसाल ए सवाब करने वाला खुशनूदी हासिल करेगा जो यक़ीनन बाईसे हल्ले मुशकिलात है।

इबादाते बदनी का ईसाले सवाब

इबादते बदनी के सवाब पहुंचाने के मुतअल्लिक़ कुरआने हकीम में है

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ امِنْ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْلَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ۔ پ ۲۸

और वह लोग जो इन के बाद आए कहते हैं कि ऐ हमारे रब मग़फ़िरत फ़रमा हमारी और हमारे उन भाईयों की जो हमसे पहले बहालते ईमान गुज़र चुके।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया–

مَا الْمَيِّتُ فِى الْقَبْرِ اِلَّا كَالْغَرِيْقِ الْمُتَغَوِّثِ يَنْتَظِرُ دَعْوَةً تَلْحَقُهُ مِنْ اَبٍ اَوْ اُمٍّ اَوْ اَخٍ اَوْ صَدِيْقٍ فَاِذَا لَحِقَتْهُ كَانَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا وَاِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى لَيُدْخِلُ اِلٰى اَهْلِ الْقُبُوْرِ مِنْ دُعَاءِ اَهْلِ الْاَرْضِ اَمْثَالَ الْجِبَالِ وَاِنَّ هَدِيَّةَ الْاَحْيَاءِ اِلَى الْاَمْوَاتِ الْاِسْتِغْفَارُ لَهُمْ۔

(مشکوٰۃ شریف ص ۲۰۶)

मुर्दा की हालत क़ब्र में डूबते हुए फ़रियाद करने वाले की तरह होती है वह इन्तज़ार करता है कि उसके बाप या मां या भाई की या दोस्त की तरफ़ से उसको किसी की दुआ पहुंचे और जब उसको किसी की दुआ पहुंचती है तो उस दुआ का पहुंचना उसकोदुनिया व माफ़िहा से महबूबतर होता है और बेशक अल्लाह तआला अहले ज़मीन की दुआ से अहले क़ुबूर को पहाड़ों की मिस्ल अजर व रहमत अता करता है। और बेशक ज़िन्दों का तोहफ़ा मुर्दों की तरफ़ यही है कि उन के लिए बख़्शिश की दुआ मांगी जाए।

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया –

يُتْبَعُ الرَّجُلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْحَسَنَاتِ اَمْثَالُ الْجِبَالِ فَيَقُوْلُ اَنّٰى هٰذَا؟ فَيُقَالُ بِاسْتِغْفَارِ وَلَدِكَ لَكَ۔ (الادب المفرد للبخاری ص ۹ وشرح الصدور ص ۱۲۷)

क़यामत के दिन पहाड़ों जैसी नेकियां इन्सान के (आमाल से) लाहिक़ होंगी तो वह कहेगा कि ये कहां से हैं तो फ़रमाया जाएगा कि ये तुम्हारी औलाद के इस्तग़फ़ार के सबब से हैं जो तुम्हारे लिए किया गया है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने जन्नत में अपने एक नेक बन्दे का दर्जा बुलन्द फ़रमाया –

فَيَقُوْلُ يَارَبِّ اَنّٰى لِىْ هٰذِهٖ؟ فَيَقُوْلُ بِاسْتِغْفَارِ وَلَدِكَ لَكَ۔

(مشکوٰۃ ص ۲۵۶)

तो वह अर्ज़ करता है ऐ मेरे रब मेरा दर्जा क्योंकर बुलन्द हुआ? इरशाद हुआ कि तेरा बेटा जो तेरे

लिए दुआए बख़्शिश मांगता है इस के सबब से।

इस हदीस से साबित हुआ कि अगर किसी नेक बन्दे या किसी बुज़ुर्ग के लिए दुआए बख़्शिश की जाए तो उसके दर्जे बुलन्द हो जाते हैं। और गुनहगार के लिए की जाए तो उससे सख्ती और अज़ाब दूर हो जाता है जैसा कि पहले बयान हुआ।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया –

أُمَّتِیْ أُمَّةٌ مَرْحُوْمَةٌ تَدْخُلُ قُبُوْرَهَا بِذُنُوْبِهَا وَتَخْرُجُ مِنْ قُبُوْرِهَا لَاذُنُوْبَ عَلَيْهَا تَمَحَّصُ عَنْهَا بِاسْتِغْفَارِ الْمُؤْمِنِيْنَ ـ (شرح الصدور ص ۱۲۸)

मेरी उम्मत उम्मते मरहूमा है वह क़ब्रों में गुनाहों के साथ दाख़िल होगी और जब क़ब्रों से निकलेगी उस पर कोई गुनाह नहीं होगा। अल्लाह तआला मोमिनों के इस्तग़फ़ार की वजह से उसको गुनाहों से पाक व साफ़ कर देगा।

हज़रत अली करमल्लाहु वजहू फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया –

مَنْ مَرَّ عَلَى الْمَقَابِرِ وَقَرَأَ قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ اِحْدٰى عَشَرَةَ مَرَّةً ثُمَّ وَهَبَ اَجْرَهٗ لِلْاَمْوَاتِ اُعْطِیَ مِنَ الْاَجْرِ بِعَدَدِ الْاَمْوَاتِ ـ (دار قطنی، درمختار بحث قرأت الميتة باب الدفن شرح الصدور ص ۱۳۰)

जो शख़्स क़ब्रों पर गुज़रा और उसने सूरह इख़्लास को ग्यारह मर्तबा पढ़ा। फिर उस का सवाब मुर्दों को बख़्शा तो उसको मुर्दों की तअदाद के बराबर अजर व सवाब मिलेगा।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया–

مَنْ دَخَلَ الْمَقَابِرَ ثُمَّ قَرَأَ فَاتِحَةَ الْكِتَابِ وَقُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ وَاَلْهٰكُمُ

जो शख़्श क़ब्रिस्तान जाए फिर एक मर्तबा सूरह फ़ातिहा और .कुलहुवल्लाहु अहद और अलहाकुमु त्तका–सुरू पढ़ कर

التَّكَاثُرُ ثُمَّ قَالَ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ قَدْ جَعَلْتُ ثَوَابَ مَا قَرَأْتُ مِنْ كَلَامِكَ لِاَهْلِ الْمَقَابِرِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ كَانُوْا شُفَعَاءَ لَهٗ اِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى ـ (شرح الصدور ص ۱۳۰)

कहे कि ऐ अल्लाह जो कुछ मैंने तेरे कलाम से पढ़ा है उसका सवाब मैंने इन कब्रों वाले मोमिनीन और मोमिनात को बख़्शा तो वह तमाम मुर्दे अल्लाह तआला की बारगाह में उस के लिए सिफ़ारिश करते हैं।

इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं।

اِذَا دَخَلْتُمُ الْمَقَابِرَ فَاقْرَءُوْا بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ وَالْمُعَوِّذَتَيْنِ وَقُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ وَاجْعَلُوْا ذٰلِكَ لِاَهْلِ الْمَقَابِرِ فَاِنَّهٗ يَصِلُ اِلَيْهِمْ ـ (شرح الصدور ص ۱۳۰)

कि जब तुम मक़ाबिर यानी क़ब्रिस्तान जाओ तो सूरह फ़ातिहा और मऊज़तैन और सूरह इख़्लास पढ़ो और उन का सवाब अहले मक़ाबिर को पहुंचाओ। क्यों कि वह उनको पहुंचता है।

इमाम नोवी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं–

يُسْتَحَبُّ لِزَائِرِ الْقُبُوْرِ اَنْ يَقْرَأَ مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ وَيَدْعُوْ لَهُمْ عَقَبَهَا نَصَّ عَلَيْهِ الشَّافِعِیُّ وَاتَّفَقَ عَلَيْهِ الْاَصْحَابُ وَزَادَ فِیْ مَوْضِعٍ اٰخَرَ وَاِنْ خَتَمُوا الْقُرْاٰنَ عَلَى الْقَبْرِ كَانَ اَفْضَلَ ـ (شرح الصدور ص ۱۳۰)

ज़ाइरे .कुबूर के लिए मुस्तहब यह है कि जितना उससे हो सके .कुरआन पढ़े और अहले .कुबूर के लिए दुआ करे इमाम शाफ़ई ने इस पर नस पेश की है और तमाम शाफ़ई हज़रात इस पर मुत्तफ़िक़ हैं और अगर क़ब्र पर कुरआन शरीफ़ ख़त्म किया जाए तो और भी अफ़ज़ल है।

हज़रत मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाह अलैह औलिया कुब्बार में से हैं। फ़रमाते हैं कि मैं जुमे की रात को क़ब्रिस्तान में गया। मैंने देखा कि वहां नूर चमक रहा है। मैंने ख़्याल किया कि अल्लाह तआला ने क़ब्रिस्तान वालों को बख़्श दिया है ग़ैब से आवाज़ आई ऐ मालिक बिन

दीनार यह मुसलमानों का तोहफ़ा है जो उन्होंने क़ब्रों वालों को भेजा है। मैंने कहा तुम्हें ख़ुदा की क़सम है मुझे बताओ कि मुसलमानों ने क्या तोहफ़ा भेजा है?

उसने कहा कि एक मोमिन मर्द ने उस रात उस क़ब्रिस्तान में क़याम किया तो उसने वुज़ू करके दो रकअतें पढ़ीं और उन दो रकअतों में सूरह फ़ातिहा के बाद पहली रकअत में कुल या अय्युहल काफ़िरूना और दूसरी रकअत में कुल हुवल्लाहु अहद पढ़ा और कहा ऐ अल्लाह! इन दो रकअतों का सवाब मैंने इन तमाम क़ब्रों वाले मोमिनीन को बख़्शा पस उस की वजह से अल्लाह तआला ने हम पर यह रोशनी और नूर भेजा है और हमारी क़ब्रों में कुशादगी और फ़रहत पैदा फ़रमाई है। हज़रत मालिक बिन दीनार फ़रमाते हैं उस के बाद मैं हमेशा दो रकअतें पढ़कर हर जुमेरात में मोमिनीन को बख़्शता। एक रात मैंने नबी करीम अलैहित्तहीय्यतु वत्तस्लीम को ख़्वाब में देखा, फ़रमाया ऐ मालिक बिन दीनार! बेशक अल्लाह ने तुझ को बख़्श दिया। जितनी मर्तबा तूने मेरी उम्मत को नूर का हदिया भेजा है और उतना ही अल्लाह ने तेरे लिए सवाब किया है। और नीज़

قَالَ رَجُلٌ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ قَامَ فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ فَاَسْبَغَ الْوُضُوْءَ وَصَلّٰى رَكْعَتَيْنِ وَقَرَأَ فِيْهِمَا فَاتِحَةَ الْكِتَابِ وَقُلْ يَا اَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ وَقُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ وَقَالَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ قَدْ وَهَبْتُ ثَوَابَهَا لِاَهْلِ الْمَقَابِرِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فَاَدْخَلَ اللّٰهُ عَلَيْنَا الضِّيَاءَ وَالنُّوْرَ وَالْفُسْحَةَ وَالسُّرُوْرَ فِي الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ۔

قَالَ مَالِكٌ فَلَمْ اَزَلْ اَقْرَأُهُمَا فِيْ كُلِّ لَيْلَةِ جُمْعَةٍ فَرَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ فِيْ مَنَامِيْ يَقُوْلُ لِيْ يَا مَالِكُ ابْنَ دِيْنَارٍ قَدْ غَفَرَ اللّٰهُ لَكَ بِعَدَدِ النُّوْرِ الَّذِيْ اَهْدَيْتَهٗ اِلٰى اُمَّتِيْ وَلَكَ ثَوَابُ ذٰلِكَ ثُمَّ قَالَ لِيْ وَبَنَى اللّٰهُ لَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ فِيْ قَصْرٍ يُقَالُ لَهُ الْمُنِيْفُ قُلْتُ وَمَا الْمُنِيْفُ؟ قَالَ الْمُطَّلُ عَلٰى اَهْلِ الْجَنَّةِ۔ (شرح الصدور ص ۱۲۸)

अल्लाह तआला ने तेरे लिऐ जन्नत में एक मकान बनाया है जिस का नाम मिनीफ़ है मैंने अर्ज़ किया मिनीफ़ क्या है? फ़रमाया जिस पर अहले जन्नत भी झाकेंगे।

मैय्यत के लिए तस्बीह व कलिमा पढ़ना

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हज़रत सअद इब्ने मआज़ रज़िल्लाहु तआला अन्हु की वफ़ात हुई तो हमने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ उन पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। फिर उन को क़ब्र में उतारकर उन पर मिट्टी डाल दी गयी। बाद में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तक्बीर व तस्बीह पढ़ना शुरू कर दी, हमने भी आप के साथ पढ़ना शुरू कर दिया। देर तक पढ़ते रहे।

तो किसी ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आपने तस्बीह व तक्बीर क्यों पढ़ी? फ़रमाया इस नेक बन्दे पर उसकी क़ब्र तंग हो गयी थी। हमारी तस्बीह व तक्बीर के सबब से अल्लाह ने उसको फ़राख़ कर दिया है।

فَقِيْلَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ لِمَ سَبَّحْتَ ثُمَّ كَبَّرْتَ؟ قَالَ لَقَدْ تَضَايَقَ عَلٰى هٰذَا الْعَبْدِ الصَّالِحِ قَبْرُهٗ حَتّٰى فَرَّجَهُ اللّٰهُ عَنْهُ۔ (مشکوٰۃ ص ۲۶)

इस हदीस से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाबा ए किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम का क़ब्र पर तक्बीर व तस्बीह पढ़ना और उनकी तक्बीर व तस्बीह से साहबे क़ब्र को फ़ायदा पहुँचना अज़हर मिनश्शम्स है। अगर ग़ौर किया जाये तो इससे बाद अज़ दफ़न अज़ान देने का मसला भी समझ में आ सकता है।

मौलवी मौहम्मद क़ासिम साहब नानूतवी बानी मदरसा देवबन्द फ़रमातें हैं –

हज़रत जुनैद रहमतुल्लाह अलैह के किसी मुरीद का रंग यकायक मुतग़ैय्यर हो गया। आपने सबब पूछा तो बुरूए मुकाशिफ़ा उसने कहा कि अपनी मां को दोज़ख़ में देखता हूं। हज़रत जुनैद रहमतुल्लाह अलैह

ने एक लाख पांच हज़ार बार कभी कलिमा पढ़ा था। यूं समझ कर कि बाज़ रिवायतों में इस क़द्र कलमा के सवाब पर वादा–ए–मग़फ़िरत है। अपने जी ही जी में उस मुरीद की मां को बख़्श दिया और उसको इत्तलाअ न दी। मगर बख़्शते ही क्या देखते हैं कि वो नौजवान हश्शाश बश्शाश है आपने फिर सबब पूछा– उसने अर्ज़ किया कि अब अपनी वालिदा को जन्नत में देखता हूं– सो आपने उस पर यह फ़रमाया कि उस जवान के मुकाशिफ़ा की सेहत तो मुझको हदीस से मालूम हुई और हदीस की तसहीह इस मुकाशिफ़ा से हो गई। (तहज़ीरूउन्नास)

हज़रत सअद बिन इबादह रज़ियल्लाह अन्हुमा ने हाज़िर होकर अर्ज़ किया। या रसूलुल्लाह मेरी मां मर गयी है।

فَاَیُّ الصَّدَقَةِ اَفْضَلُ قَالَ الْمَاءُ فَحَفَرَ بِئْرًا وَقَالَ هٰذِهٖ لِاُمِّ سَعْدٍ۔

(ابُو داوُد کتاب الزکوٰۃ)

तो कौनसा सदक़ा अफ़ज़ल है (जो मां के लिए करूं) फ़रमाया पानी। तो हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुवां खुदवा दिया और कहा की यह सअद की मां के लिए है।

इस हदीस में यह बात निहायत ही क़ाबिले ग़ौर है कि हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे जलीलुल क़द्र सहाबी फ़रमा रहे हैं कि यह कुवां सअद की मां के लिए है यानी उन की रूह को सवाब पहुंचाने की ग़र्ज़ से बनवाया गया है इस से सराहतन साबित हुआ कि जिस की रूह को सवाब पहुंचाने की ग़र्ज़ से कोई सदक़ा व ख़ैरात की जाए अगर उस सदक़ा और ख़ैरात और नियाज़ पर मजाज़ी तौर पर उसका नाम लिया जाए यानी यूं कहा जाए कि यह सबील हज़रत इमाम हुसैन और शुहदाए करबला रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए है। या यह खाना, यह नियाज़ सहाबा किराम अहले बैत अतहार या ग़ौसे आज़म या ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के लिए है। तो हरगिज़–हरगिज़ उस सबील का पानी और वह खाना और नियाज़ वग़ैरह हराम न होगा। वरना फिर यह कहना पड़ेगा कि उस कुवें का पानी हराम था। हालांकि उस कुवें का पानी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम

अजमईन और बाद में ताबईन और तबअ ताबईन और अहले मदीना ने पिया। क्या कोई मुसलमान कह सकता है कि उन सब मुक़द्दस हज़रात ने हराम पानी पिया था? मआज़ल्लाह कोई मुसलमान तो ऐसा कह नहीं सकता। जिस कुवें के पानी के मुतअल्लिक़ यह कहा गया कि यह सअद की मां के लिए है उस कुंवें का पानी नबी करीम अलैहित्तहियतु वत्तस्लीम और सहाबा–ए–किराम के नज़दीक हलाल व तय्यब है तो जिस सबील के पानी के मुतअल्लिक़ यह कहा जाए कि यह इमाम हुसैन और शोहदाए करबला रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए है या यह नियाज़ वग़ैरह फ़लां के लिए है तो वह मुसलमानों के नज़दीक भी हलाल व तय्यब है।

तीजा, साता, ग्यारहवीं, चहल्लुम, उर्स या बरसी करना

जब आपने मसला ईसाले सवाब को अच्छी तरह से समझ लिया है तो यह भी मान लीजिये कि ग्यारहवीं कूंडे सबील, तीजा, साता, चहल्लुम और बरसी वग़ैरह यह सब ईसाले सवाब के नाम हैं। और ईसाले सवाब .क़ुरआन व हदीस से साबित है जैसा कि ऊपर बयान हुआ। तो अब उनके जायज़ होने में क्या शुबहा रहा।

मैय्यत पर तीन दिन ख़ास कर सोग किया जाता है। बुज़ुर्गों ने फ़रमाया तीन दिन सोग क्या है अब उठने से पहले चन्द घर के अफ़राद मिल कर कुछ सदक़ा करो। कुछ पढ़ो और उस का सवाब मैय्यत की रूह को पहुंचा कर उठो। उस का नाम सोयम या तीजा मशहूर हो गया। और हज़रत शाह वलीयुल्लाह साहब **मुहद्दिस** देहलवी रहमतुल्लाह अलैह का भी तीजा हुआ। चुनांचे हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब मुहद्दिस देहलवी फ़रमाते हैं –

"रोज़े सोयम कसरते हुजूम मरदुमे आं क़द्र बूद कि बैरून अज़ हिसाब अस्त, हिश्ताद व यक कलामुल्लाह बशुमार आमदह व ज़्यादह हम शुदह बाशद व कलिमा रा हसर नीस्त" (मल्फ़ूज़ाते अज़ीज़ी ५५)

तर्जुमा – तीसरे दिन लोगों का हुजूम इस क़द्र था कि शुमार से बाहर है। इक्यासी कलामुल्लाह ख़त्म हुए। बल्कि उस से भी ज़्यादा हुए होंगे और कलमा तैय्यबा का तो अन्दाज़ा ही नहीं कि कितना पढ़ा गया।

आदाबे फ़ातिहा

आदाबे फ़ातिहा का लिहाज़ रखना ज़रूरी है। हलाल और पाक चीज़ों पर फ़ातिहा देना चाहिए फ़ातिहा लोगों को दिखाने और अपनी नामवरी की ग़र्ज़ से न हो बल्कि ख़ालिस अल्लाह के वास्ते हो। बेहतर है कि अपने घर में फ़ातिहा की चीज़ें पकाई जायें क्योंकि घर की चीज़ों में एहतियात बहुत ज़्यादा होती है। और अगर घर में न पका सकें तो बदर्जा मजबूरी किसी परहेज़गार मुसलमान (अहले सुन्नत व जमाअत से ख़रीदें। किसी गुस्ताख़े रसूल से हरगिज़ न ख़रीदें क्योंकि यह परहेज़गार तो क्या गुस्ताख़ी के सबब मुसलमान भी नहीं हाते) की दुकान से ख़रीद कर फ़ातिहा दिलायें और ऐसी चीज़ों पर फ़ातिहा दिलायें जो खुद को पसन्द हों या आम तौर पर हर शख़्स पसन्द करता हो मसलन हलवा मिठाई खीर और वह चीज़ जिस में शकर पड़ी हुई हो क्योंकि हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया मोमिन मीठे हैं और मीठी चीज़ों को पसन्द करते हैं। और क़ुरआन करीम में फ़रमाया गया है कि हरगिज़ भलाई को नहीं पहुंच सकते जब तक कि ख़ुदा के रास्ते में महबूब चीज़ों को सर्फ़ न करो। और उससे ज़्यादा कौनसी चीज़ महबूब होगी जिस को खुद अल्लाह के महबूब हमारे मतलूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पसन्द फ़रमाया हो। इसी तरह गोश्त पर फ़ातिहा देना है क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने गोश्त को भी पसन्द फ़रमाया है और मीठे नये फल, शहद, शरबत, दूध पुलाव, ज़र्दा और हलीम वग़ैरह इनमें से कोई एक शै हो या सब हों बल्कि उस शै को मुक़द्दम किया है जो उसको पसन्द हो जिस की फ़ातिहा या नज़र

करना मक़सूद है। जिस जगह फ़ातिहा दी जाए वहां लोबान या अगरबत्ती भी सुलगायें तो बेहतर है।

तरीक़ा फ़ातिहा

बावजू क़िबला रुख दोज़ानों बैठें। सामने शीरीनी हलाल व तय्यब कमाई और सफ़ाई से तैयार की हुई कुल या जुज़ साथ ही पानी भी सामने रखें। पहले दुरूदे ग़ौसिया اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَّعْدِنِ الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ तीन बार

फिर اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○ एक बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ एक बार पढ़कर कुरआन पाक का एक रुकूअ जहां से याद हो पढ़ें। फिर मअ बिस्मिल्लाह सूरह قُلْ يٰاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ○ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ○ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ○ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ○ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ○ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ○

एक बार– फिर मअ बिस्मिल्लाह सूरह इख़लास

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ○ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ○ لَمْ يَلِدْ ○ وَلَمْ يُوْلَدْ ○ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○

तीन बार –फिर मअ बिस्मिल्लाह सूरह

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ○ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ○ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ○ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ○ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ○

एक बार – फिर मअ बिस्मिल्लाह قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ○

مَلِكِ النَّاسِ ۙ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ

الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ؏

एक बार – फिर मअ बिस्मिल्लाह सूरह फ़ातिहा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۙ

الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۙ مٰلِكِ یَوْمِ الدِّیْنِ ؕ اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَاِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ ؕ

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ

عَلَیْهِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ ؏

एक बार – फिर मअ बिस्मिल्लाह

الٓمّٓ ۚ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَیْبَ ۛ

فِیْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِیْنَ ۙ الَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِالْغَیْبِ وَیُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوةَ

وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ۙ وَالَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ وَمَاۤ

اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ یُوْقِنُوْنَ ؕ اُولٰٓىِٕكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ

رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ○

मअ बिस्मिल्लाह एक बार

وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ

قَرِیْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِیْنَ ؕ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ ؕ مَا كَانَ

مُحَمَّدٌ اَبَاۤ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِیّٖنَ ؕ

وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓىِٕكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِیِّ ؕ

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ○

अगर वक़्त हो और मुनासिब समझें तो दुरूदे ताज एक बार वरना दुरूदे ग़ौसिया तीन बार

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا یَصِفُوْنَ ۚ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِیْنَ ۚ

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ○

इसके बाद शजर–ए–मन्जूम एक बार पढ़ें।

दुआ

फिर दोनों हाथ उठा कर दुरूदे पाक اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَسَلَامٌ عَلَیْكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰهِ पढ़कर यूं बारगाहे इलाही में अर्ज़ करें कि नअ़त ख़्वानी, ज़िक्रो अज़कार, क़सीदा ग़ौसिया, क़ियाम, दुरूदो सलाम (नफ़्ल नमाज़) तिलावते कुरआन मजीद, ख़त्म शरीफ़, तबर्रुकाते तआम शीरीनी फल फ्रुट, ग़र्ज़ यह कि ऐ अल्लाह जो कलिमात तय्यबात पहले या इस महफ़िल में पढ़े या सुने गए इनमें भूल जो कर या जानकर ग़लतियां, ख़ामियां पैदा होगई हों उनको माफ़ फ़रमा और उसकी इस्लाह की तौफ़ीक़ इनायत कर। ऐ मेरे रब अपने महबूब मुकर्रम के सदक़े इस को क़बूलियत का दर्जा अता फ़रमा और अपने फ़ज़्ल व करम से सवाब इनायत फ़रमा कर इस सवाब को पहुंचा हुजूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पुरनूर सय्यदुल मुरसलीन शफ़ीउल मुजनबीन की बारगाहे आली में आपके सदक़े व तुफ़ैल तमाम अम्बिया राशिदीन अहले बैत किराम व जुमला सहाबा ताबईन तबअ ताबईन अइम्मा मुजतहदीन व अइम्माए तरीक़त हुजूर ग़ौसे पाक शैख़ सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी

रहमतुल्लाह अलैह व ग़रीब नवाबज़ ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रज़ियल्लाहु अन्हु जुमला सादात व जमीअ बुजुर्गाने सिलसिलाए आलिया क़ादरिया चिश्तिया, सुहर वर्दिया नक़्शबंदिया वग़ैरह–वग़ैरह व जमीअ अरवाहे सिद्दीक़ीन शोहदा व सालिहीन औलियाए किराम सूफ़ियाए इज़ाम मुतक़द्दिमीन से लेकर मुतआख़िरीन तक जुमला मोमिनीन व मोमिनात मुस्लिमीन व मुस्लिमात अगर पीरो मुर्शिद या वालिदैन में से कोई ज़िन्दा ही हों उनको भी सवाब बख़्शें। खुसूसन जिसको बख़्शना मक़सूद हो उस का नाम लेकर उनकी ख़िदमत में सवाब पेश करें। फिर मुन्दर्जा बाला तमाम बुजुर्गों के तुफ़ैल रब्बुलइज़्ज़त से अपने वासते नेक दुआ क़बूल करने की गुज़ारिश करें। खुसूसन ईमान पर ख़ातमा की दुआ ज़रूर किया करें। क्यों कि आए दिन नये–नये फ़ितने और नये–नये मज़ाहिब नुमूदार हो रहे है। गुमराह होने में कुछ देर नहीं लगती। अल्लाह तआला अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सदक़े रहबर नुमा ईमान के रहज़नों लुटेरों से बचाए। आमीन० إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ आख़िर आयत तक फिर اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ وَسَلِّمْ عَلَيْكَ पर ख़त्म करें।

नोटः- औरत और नाबालिग़ बच्चा भी फ़ातिहा पढ़ सकते हैं। शर्त तलफ़्फ़ुज़ सही अदा करना है वरना बालिग़ मर्द भी खुद न पढ़े किसी ख़ास सुन्नी क़ारी से पढ़ायें और सही पढ़ने की कोशिश करते रहें। बेअदब और गुस्ताख़े रसूल से फ़ातिहा न पढ़ायें कि यह मासूम सूरत ज़ालिम आहिस्ता–आहिस्ता बद दुआ बल्कि गालियां तक दे कर मुंह पर हाथ फेर लेते हैं और अपने हम अक़ीदा दोस्तों में बैठ कर ख़ूब मज़ाक़ उड़ाते हैं। लिहाज़ा तमाम अहले सुन्नी हज़रात ख़ास एहतियात रखें।

सामने रख कर फ़ातिहा देने का सुबूत

अहले सुन्नत के सारे मुहद्दिसीन व फ़ुक़हा और जुमला अइम्मए इस्लाम और मशाइख़े तरीक़त का मुत्तफ़िक़ा अक़ीदा है अपने हर अमले ख़ैर का सवाब किसी भी मोमिन मर्द को पहुंचाया जा सकता है। इसी का नाम ईसाले सवाब है फ़ातिहा मुरव्विजा, उर्स शरीफ़, ग्यारहवीं शरीफ़, ख़त्म ख़्वाजगां, फ़ातिहा शबे बरात, फ़ातिहा मुहर्रम, तीजा, चालीसवां वग़ैरह। यह सारी चीज़ें ईसाले सवाब ही की मुख़्तलिफ़ शकलें हैं और अगर इन सारी चीज़ों का आप तजज़िया करें तो यह बात वाज़ेह तौर पर आपके सामने आजाएगी कि यह सारे उमूर तिलावते कुरआन पाक, सदक़ा व ख़ैरात, अतआमे मसाकीन और अज़कार व दाअवात पर मुश्तमिल हैं। और इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि इन सारी चीज़ों के ज़रिये ईसाले सवाब की बुनियादी किताब व सुन्नत और फ़िक़्हे हनफ़ी में मौजूद हैं।

चुनांचे फ़िक़्हे हनफ़ी की मुस्तनद किताब हिदाया में है।

إِنَّ الْإِنْسَانَ لَهٗ أَنْ يَجْعَلَ ثَوَابَ عَمَلِهٖ لِغَيْرِهٖ صَلٰوةً أَوْصَوْمًا أَوْصَدَقَةً وَغَيْرَهَا عِنْدَ أَهْلِ السُّنَّةِ وَالْجَمَاعَةِ ۔ (ہدایہ)

यानी अहले सुन्नत का अक़ीदा है कि आदमी अपने अमल का सवाब दूसरे शख़्स को बख़्श सकता है चाहे नमाज़ का हो या रोज़ा का हो या सदक़े का और इसके इलावा किसी भी अमले ख़ैर का। जैसे तिलावते कुरआन या अज़कार वग़ैरह।

और शरह फ़िक़्हे अकबर में है।

مذهب أبي حنيفة وأحمد وَجُمْهُوْرِ السَّلَفِ أَنَّ ... وُصُوْلُهَا ۔

यानी इमाम आज़म अबू हनीफ़ा और इमाम अहमद बिन हम्बल और जम्हूर सल्फ़ सालिहीन का मज़हब यह है कि इबादत बदनी व माली का सवाब मुर्दों को पहुंचता है।

अब रह गई बात हैअत कज़ाई यानी मख़सूस शक्ल की तो वह ईसाले सवाब के लिए शर्त लाज़िम नहीं है। बल्कि वह अमली मसलिहतों पर मबनी है। मिसाल के तौर पर खाना या शीरीनी सामने रख कर कुरआन की आयतें पढ़ना और उसका सवाब किसी मुर्दे की रूह को पहुंचाना तबअी इस्तेहज़ार और कुव्वते एहसास की तस्कीन के लिए है और मुतअद्दिद हदीसों में इसकी भी असल मौजूद है।

जैसा कि बुख़ारी और मुस्लिम की मुतअद्दिद रिवायात में आया है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ पर खाने की चीज़ों को जमा करके अपने सामने रखा और उन पर बरकत की दुआ फ़रमाई। ईसाले सवाब ही के सिलसिले में यह हदीस भी आई है कि हज़रत सअ़द रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब अपनी वालिदा मरहूमा के ईसाले सवाब के लिए कुंवां खुदवाया और वह तैयार हो गया तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम कुंवें पर तशरीफ़ ले गए। और उसके सामने खड़े होकर इर्शाद फ़रमाया –

इस कुंवें का पानी सअद की मां के ईसाले सवाब के लिए है।

और खाने की चीज़ को सामने रख कर सवाब पहुंचाने की ग़र्ज़ से दुआ करने की सबसे मज़बूत दलील तो ज़बह कुरबानी के बाद की यह दुआ है। जो इतनी शाअे ज़ाअे है कि फ़ातिहा के मुनकरीन भी इस पर अमल करते हैं और वह दुआ यह है। जिसकी तालीम खुद हुज़ूर नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी है।

अरबी की दुआ

"اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ هٰذِهٖ الاضْحِيَةَ مِنْ فُلَانٌ" यानी ऐ अल्लाह इस कुरबानी का जानवर फ़लां की तरफ़ से क़बूल फ़रमा। ***"हाज़िही"*** अरबी ज़बान में सामने की चीज़ के लिए बोला जाता है। इससे भी बख़ूबी साबित हो गया कि जिस चीज़ का सवाब पहुंचाना हो या जिस पर कुछ पढ़ना हो उसे सामने रहना चाहिए।

मुझे उम्मीद है इंसाफ़ पसंद आदमी की तशफ़्फ़ी के लिए सामने रख कर फ़ातिहा देने के सिलसिले में इतनी दलीलें बहुत काफ़ी होंगी। अब रह गए मुआनिद क़िस्म के लोग तो उनकी तशफ़्फ़ी के लिए कुरआन व हदीस का सारा ज़ख़ीरा भी नाकाफ़ी है। खुदा अपने बन्दों को हक़ क़बूल करने की तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमाये।

हमारी हिन्दी किताबें

सुन्नी बहिश्ती ज़ेवर	शमा शबिसताने रज़ा
दरूदे नूरानी	जाअल हक़
मिलादुन्नबी	इसलामी शरीयत
ज़लज़ला	सीरते ग़ौसुल आज़म
नमाज़ की तालीम	इसलामी ज़िंदगी
तरिक़ऐ फातिहा	नक़शे करबला
रसूले करीम	जवानी की हिफ़ाज़त
इसलामी नाम	सच्ची नमाज़

मकतबा जामेनूर दिल्ली-6

Rs. 3=00

Ph. : 3281418